

व्यवस्थाविवरण: व्यवस्थाविवरण 4

सत्र 3; डॉ सिंथिया पार्कर

यह डॉक्टर सिंथिया पार्कर और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर उनका शिक्षण है। यह व्यवस्थाविवरण 4 पर सत्र 3 है।

### हिंज अध्याय के रूप में व्यवस्थाविवरण 4 का परिचय

ठीक है, इस व्याख्यान में मिलते हैं। हम व्यवस्थाविवरण 4 पर एक नज़र डाल रहे हैं; व्यवस्थाविवरण 4 ऐसा ही एक विशेष अध्याय है। मुझे यह अध्याय सचमुच बहुत पसंद है। मुझे खुशी है कि हम इस एक अध्याय पर पूरा व्याख्यान खर्च कर रहे हैं क्योंकि यह इतनी आश्चर्यजनक चीजों से भरा है कि हमें इस पर गौर करने की जरूरत है। यह ईडन-प्रकार की गूँज से भरा है। हम उसमें से कुछ सुनेंगे। वास्तव में, मैं कहूँगा कि जैसे ही हम अध्याय 4 में पहुंचते हैं, चौथा व्यवस्थाविवरण के दिल की धड़कन, ढोल की थाप की तरह है। तो, ऐसे शब्द हैं जिन्हें हम पहली बार पकड़ते हैं, वाक्यांश जिन्हें हम व्यवस्थाविवरण में पहली बार यहां अध्याय 4 में छूते हैं। लेकिन हम उन्हें यहां पूरी किताब में गूँजते हुए सुनेंगे; अध्याय चार के साथ, हम व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के मर्म को समझ रहे हैं।

तो, हमारे पास वे अध्याय हैं जिन पर हमने अभी नज़र डाली, अध्याय 1, 2, और 3, और उन्होंने हमें यह ऐतिहासिक आख्यान, थोड़ी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि दी। इसलिए हमने यह देखने में थोड़ा समय बिताया कि हम न केवल भौगोलिक रूप से बल्कि ऐतिहासिक रूप से भी कहां स्थित हैं, और इसलिए हमें अध्याय 1, 2 और 3 में वह सब मिल गया। इसलिए, अध्याय 4 एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में कार्य करने जा रहा है। हम। इसलिए, हम ऐतिहासिक आख्यानों से कानून संहिता की ओर बढ़ रहे हैं, जिसे हम थोड़ा समझने जा रहे हैं। जब तक हमें यह नहीं मिला, लोग सीमा के किनारे खड़े थे, उस भूमि की ओर देख रहे थे जिसके बारे में उन्हें बताया गया था कि भगवान उन्हें दे रहा है, और जब वे भूमि में आ जाएंगे तो हम कैसे कार्य करना है, इसके लिए

आवश्यकताओं को उठाएंगे। . अध्याय 4 हमें इस ओर ले जाने जैसा है। यह ऐतिहासिक आख्यानोँ और कानून के बीच टिका है।

जैसा कि मैंने कहा, यह किताब की धड़कन है और वह बातें कहती है जिन्हें हम अध्याय 4 से समझने जा रहे हैं। हमें यह विचार आ रहा है कि इतिहास, वह इतिहास और जो आख्यान हमने पहले बताए थे, वे बहुत महत्वपूर्ण हैं। यह विचार हम पहली बार लेने जा रहे हैं क्योंकि यह भूमि उनके लिए बनाई गई है। यह अच्छी भूमि है, यह वह भूमि है जो भगवान उन्हें दे रहे हैं और कहते हैं कि आप इस भूमि में फल-फूल सकते हैं, लेकिन हम पहली बार देख रहे हैं कि निर्वासन की संभावना हो सकती है। तो यह पहली बार अध्याय 4 में दिखाई देता है, जिसमें केवल निर्वासन का खतरा नहीं होता है। हम पाते हैं कि निर्वासन की संभावना है, लेकिन पुनर्स्थापना भी संभव है, और इसलिए यह एक विषय है जिसे हम व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में कुछ अलग-अलग समय पर सुनेंगे। हम यहां पहली बार पकड़ते हैं। अध्याय 4 में, यह विचार कि इतिहास महत्वपूर्ण है, निर्वासन की संभावना है, लेकिन जैसे निर्वासन संभव है, वैसे ही वापसी भी संभव है, जो अध्याय 4 में दिखाई देता है।

हम यह देखने जा रहे हैं कि अध्याय 4 वास्तव में अच्छी किताबों का निर्माण करता है, व्यवस्थाविवरण अध्याय 29 से 30 के अंत के साथ। मैं वास्तव में इसे फैला सकता हूं और कह सकता हूं, अध्याय 32 तक। यहां तक कि हम भी यह कह सकते हैं, लेकिन हम फिर सुनने जा रहा हूँ. एक बार जब हम अध्याय 29 और 30 में पहुँचते हैं, तो वे व्याख्यान कहने वाले थे, "क्या यह आपको अध्याय 4 की याद नहीं दिलाता है?" तो, वहाँ वाक्यांशविज्ञान है, और ऐसा लगता है कि यह दोनों पक्षों पर समाप्त होता है। यह कानून के इर्द-गिर्द सभी जटिल बातों के बारे में वास्तव में अच्छा बहीखाता बनाता है, 3. यह सब व्यवस्थाविवरण 4 में है।

### **सुनने पर (शेमा)**

तो, हम यह भी पाएंगे कि व्यवस्थाविवरण 4 शेमा के विचार, "सुनो" से शुरू होता है। अब, हिब्रू में यह अवधारणा, और मूल दर्शकों के लिए, केवल उस चीज़ को सुनने के लिए नहीं थी जो आपको बताई जा रही है। जब आपसे शेमा को "सुनने" के लिए कहा जाता है, तो यह यहाँ सुनना

और करना है। करने वाले हिस्से को सुनने वाले हिस्से में बांधा जा रहा है। केवल सुनें और विचारों में अवधारणाओं के साथ बौद्धिक रूप से खिलवाड़ न करें और देखें कि आप सहमत हैं या असहमत। ऐसा नहीं है कि यह "सुनें" है, ताकि आप समझ सकें और कर सकें। हम "इज़राइल सुनो" की यह बड़ी पुकार सुन रहे हैं। क्या हो रहा है? हम इसे अभी प्राप्त करने जा रहे हैं, और 4:30 बजे इसे अध्याय 6 में और फिर पूरे व्यवस्थाविवरण में दोहराया जाएगा

इसलिए, हमारा यह भी विचार है कि मूसा "क़ानून और निर्णय" प्रस्तुत कर रहा है। वह पदावली, वे दो चीज़ें एक साथ या कुछ और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में बहुत बार दोहराई जाती हैं। विधियां और न्याय ही जीवन हैं। तो, फिर, यह सिर्फ़ क़ानून और नियमों और विनियमों की एक सूची नहीं है जिनका आपको पालन करना होगा। यह परमेश्वर का अपने लोगों को यह समझने में मदद करने का तरीका है कि देश में लोगों के रूप में कैसे फलना-फूलना है। इसलिए, क़ानून और निर्णय हमेशा जीवन के बराबर होते हैं।

मूसा ने उसका अनुसरण किया, यदि आप ऐसा करते हैं, तो यह बुद्धिमत्ता है, है ना? तो, यह सुनने, सुनने, उन चीज़ों को करने में है जो भगवान ने आपको बताई हैं। ध्यान देना आपकी बुद्धिमत्ता है, और वह बुद्धि महानता बन जाती है। और हम अध्याय 4 में इस विचार को देखेंगे कि महानता इस्राएलियों के आसपास के लोगों की आंखों में भी दिखाई देगी। इसके साथ एक चेतावनी भी आती है कि आपको अपने दिल की रक्षा करनी होगी क्योंकि यदि आप अंदर जाते हैं, यदि आप यह सोचना शुरू कर देते हैं कि आप इतिहास के बजाय अपने स्वयं के प्रयासों से कुछ कर रहे हैं, तो भगवान ने आपसे पहले जो कुछ भी किया है उसका इतिहास याद रखें। , यदि आप खुद पर भरोसा करना शुरू कर देंगे, तभी निर्वासन की संभावना होगी। इसलिए, तुम्हें अपने हृदय की रक्षा करनी चाहिए ताकि तुम यह याद रख सको कि तुम वास्तव में परमेश्वर पर भरोसा कर रहे हो।

तो, आइए आगे बढ़ें और व्यवस्थाविवरण अध्याय 4 से शुरुआत करें। इसलिए व्यवस्थाविवरण 4, यह वह जगह है जहां हम पहले से ही इनमें से कुछ प्रमुख वाक्यांशों को प्राप्त करना शुरू कर रहे हैं जो पूरी किताब में दोहराए गए हैं।

मूसा कहता है, "हे इस्राएल, जो विधि और नियम मैं तुझे सिखाता हूँ, उन्हें सुन, कि तू जीवित रहे, और उस देश में जा कर अपने अधिकारनों में हो जाए, जिसे यहोवा तेरे पितरों का परमेश्वर यहोवा तुझे देता है। तुम। जो वचन मैं तुम्हें सुनाता हूँ, उस में न कुछ बढ़ाना, और न उसमें से कुछ घटाना, जिस से तुम अपने परमेश्वर यहोवा की जो आज्ञाएं मैं तुम्हें सुनाता हूँ उनको मान सको।

और इसलिए, हमें यह प्रारंभिक शुरुआत मिल गई है, और हम पहले से ही सुनना शुरू कर देंगे - यदि आप विधियों और आज्ञाओं को सुनते हैं और उनका पालन करते हैं, तो आपके पास जीवन है। और इसके विपरीत यह चेतावनी है कि यदि आप अवज्ञा करेंगे, तो यह मृत्यु के बराबर होगी, और यह उनके अतीत की एक घटना को याद करने के रूप में आती है,

### **भगवान के पराक्रमी कृत्यों को याद करना**

आयत 3 में, यह कहा गया है, "तुमने अपनी आंखों से देखा है कि यहोवा ने बालपोर के विषय में क्या किया है, क्योंकि जितने मनुष्य बालपोर के पीछे हो लिए थे, उन सभी को तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे बीच में से नष्ट कर दिया है।" अब, यह वास्तव में पीछे जा रहा है और याद कर रहा है कि वह कौन सी घटना है जिसका उल्लेख किया जा रहा है। मेरा मानना है कि आपको वापस जाकर संख्या अध्याय 25 पढ़ना होगा। संख्या 25 वापस जाती है और आपको कहानी बताती है। यह इस्राएलियों की कहानी है जब वे यात्रा कर रहे होते हैं और अंत में वे बाल-पोर से होकर गुजरते हैं, और वे लोगों के साथ विवाह करते हैं, और वे संस्कृतियों का मिश्रण करते हैं, और वे अन्य लोगों के समूहों की मूर्तियों की पूजा करना शुरू करते हैं।

मूसा कह रहे हैं कि याद रखो कि जब तुम अन्य मूर्तियों और अन्य देवताओं की पूजा करते थे, तो आज वे लोग यहाँ हमारे साथ नहीं हैं, लेकिन तुम हो। इसलिए, याद रखें, क्योंकि यह परमेश्वर की विधियां और निर्णय हैं जो जीवन के बराबर हैं।

और पद 4, यहीं पर वह कहता है, "परन्तु तुम जो अपने परमेश्वर यहोवा को पकड़े हुए थे, तुम में से हर एक आज जीवित है।

### उत्पत्ति की गूँज 3

श्लोक 5, "देख, मैं ने तुम्हें विधि और नियम सिखाए हैं, जैसे मेरे परमेश्वर यहोवा ने मुझे आज्ञा दी है, कि जिस देश के अधिकारनी होने को तुम जा रहे हो उस में तुम यही किया करो।" अब मैं बस एक सेकंड के लिए रुकने जा रहा हूँ क्योंकि यही वह जगह है जहाँ मैं व्यक्तिगत रूप से उत्पत्ति कथाओं की अतिरिक्त गूँज सुनता हूँ। वे बहुत स्पष्ट नहीं हैं, लेकिन इस बातचीत में हम जो देखते हैं, मूसा, जब आप उस भूमि में जाते हैं, तो यह उस भूमि में रहने का भगवान का तरीका है जो आपको जीवन जीने और फलने-फूलने की अनुमति देता है। यदि आप उस देश में जाते हैं और भगवान की अवज्ञा करना चुनते हैं, तो परिणाम निर्वासन या मृत्यु होगा।

यह वास्तव में कुछ-कुछ उत्पत्ति अध्याय 3 जैसा लगता है, है ना? उत्पत्ति 3 में, परमेश्वर ने बगीचे में रहने वाले मनुष्यों के लिए बगीचा तैयार करवाया था, और खाने का आदेश दिया था। वह सब कुछ करने का ध्यान रखें जो आप चाहते हैं; बस वहाँ उस पेड़ का फल मत खाओ।

#### आज्ञाकारिता=उत्कर्ष, अवज्ञा=निर्वासन

लेकिन जैसे ही वे परमेश्वर के कहे के विरुद्ध जाना चुनते हैं, तब उन्हें निर्वासित कर दिया जाता है और उस स्थान से अलग कर दिया जाता है जो उनके लिए बनाया गया था, हम उसी तरह की चेतावनी सुनने के लिए तैयार होने लगते हैं। व्यवस्थाविवरण की संपूर्ण पुस्तक में उपयोग किया गया है। विचार यह है कि भूमि में ईडन जैसा बनने की क्षमता है। उस क्षमता का मतलब है कि इस पूरी तरह से बनाई गई जगह से निर्वासन को बाहर ले जाने की भी संभावना है, और यह सब इस बात पर निर्भर करेगा कि लोगों में किस तरह की आज्ञाकारिता है। क्या वे उस तरीके के प्रति वफादार रहेंगे जो भगवान ने उन्हें जीने के लिए कहा है? और यदि वे हैं, तो वे फलेंगे-फूलेंगे और जीवन पाएंगे, और परमेश्वर उनके बीच में रहेगा, और उनकी भूमि उन्हें वह सब कुछ प्रदान करेगी जिसकी उन्हें आवश्यकता है। लेकिन अगर वे ऐसा नहीं करेंगे तो उन्हें बाहर कर दिया जायेगा। हम उस प्रतिध्वनि को सुनना शुरू कर रहे हैं, यहाँ तक कि अध्याय 4 की शुरुआत में भी।

श्लोक छह में जारी रहेगा ; यहीं पर आपको पिछले वीडियो में से एक का नक्शा याद रखना होगा। इसलिए, यदि आपको याद हो, जब हमने व्यापार मार्गों के बारे में बात की थी, जो

बाइबिल की भूमि से होकर आ रहे थे, हम सुन रहे हैं कि व्यवस्थाविवरण पहले से ही इसकी सामग्री और भूमि और भूमि कैसे कार्य करती है, इसके बारे में काफी जागरूक है। श्लोक 6 सुनो,

तो, "उन्हें रखें और करें।" विधियों और आज्ञाओं का अर्थ है "क्योंकि यही तेरी बुद्धि और तेरी समझ है, कि जो लोग इन सब विधियोंको सुनेंगे वे कहेंगे, निःसन्देह यह बड़ी जाति बुद्धिमान और समझदार है; यह कैसी बड़ी जाति है" क्या कोई परमेश्वर उसके इतना निकट है, जैसा हमारा परमेश्वर यहोवा है, जब हम उसे पुकारते हैं? वह कौन बड़ी जाति है जिसके पास इस व्यवस्था के समान धर्ममय विधियां और नियम थे, जिसे मैं आज तुम्हारे साम्हने रख रहा हूँ ?

ऐसी मान्यता है कि यदि लोग अपनी भूमि में जाते हैं और भगवान के तरीके के अनुसार रहते हैं, जो मानक भगवान ने अपने लोगों के लिए स्थापित किए हैं, तो अन्य लोग इसे देखेंगे। तब आप बहुत ही तार्किक प्रश्न पूछ सकते हैं, ये सभी अन्य लोग उन्हें कैसे देखेंगे और जानेंगे,

खैर, वे व्यापार मार्गों के मध्य में हैं, है ना? तो वे लोग जो मिस्र से व्यापारी थे, मेसोपोटामिया तक जा रहे थे या अरब प्रायद्वीप में जा रहे थे, विचार यह है कि वे इस्राएलियों की भूमि से होकर गुजरे थे। यदि इस्राएली परमेश्वर की वाचा के अनुसार और परमेश्वर की विधियों और आज्ञाओं के अनुसार जी रहे हैं, तो लोगों को, जैसे-जैसे वे गुजरते गए, ध्यान देना चाहिए कि लोगों के जीने के तरीके में बहुत अंतर है।

### **याद रखें/दोहराव न भूलें**

इसलिए, 4:9 "केवल अपने तक ही रहो और अपने प्राणों का ध्यान रखो। इसलिये कि जो बातें तू ने अपनी आंखों से देखी हैं उनको जीवन भर भूल न रहे, और वे तेरे हृदय से उतर न जाएं, वरन उनको अपने बेटों और पोतोंको प्रगट कर दे; जिस दिन तू अपने यहोवा के साम्हने खड़ा हुआ या, उस दिन को स्मरण कर। होरेब में भगवान, नंबर माउंट सिनाई, जहां भगवान ने मुझसे कहा था। 'लोगों को मेरे पास इकट्ठा करो, कि मैं उन्हें अपनी बातें सुनाऊं, और जब तक वे पृथ्वी पर जीवित रहें, तब तक मेरा भय मानना सीखें, और अपने बच्चों को भी सिखाएं।' क्योंकि इसमें एक दिलचस्प विरोधाभास है, हम इसके बारे में एक अन्य व्याख्यान में अधिक विस्तार से बात करेंगे, लेकिन इन दो छंदों में, हमारे पास छंद 9 में है, "मत भूलो," और पद 10 में "याद रखें।" ये अधिक

विषय हैं जिन पर व्यवस्थाविवरण बार-बार जोर देता है। लेकिन यह ऐसी चीज़ है जिसके बारे में हमें सोचना चाहिए या कम से कम ध्यान देना चाहिए; हम इसे यहां देखने जा रहे हैं। हम इसके बारे में बाद में और बात करेंगे।

ऐसा क्या है जो उन्हें भूलना नहीं चाहिए, और ऐसा क्या है जो उन्हें याद रखना चाहिए? तो, आइए मैं आपके लिए उन छंदों को फिर से पढ़ूं।

श्लोक नौ, इसलिए बीच में, कहता है, "इसलिये जो बातें तू ने अपनी आंखों से देखी हैं उन्हें तू जीवन भर भूल न करना, और अपने हृदय से दूर न होना।" श्लोक 10, "उस दिन को स्मरण करो, जब तुम होरेब में अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने खड़े हुए थे, जब यहोवा ने मुझ से कहा था।"

यह क्या है? उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे सक्रिय रूप से याद रखें कि उनका इतिहास क्या है। कहानी लिखें, भले ही वह उनके माता-पिता की कहानी हो, भले ही वे होरेब में नहीं थे। यह उस कथा को याद कर रहा है क्योंकि उस कथा के माध्यम से, उन्हें पता चलता है कि भगवान कौन है, भगवान ने क्या किया है, और इसलिए, वे भगवान के लोग कौन हैं।

गंभीरता से, व्यवस्थाविवरण में, उन्हें कभी भी सभी कानूनों को याद रखने के लिए नहीं कहा जाता है, भले ही कानून संहिता ठीक बीच में है और व्यवस्थाविवरण में सबसे अधिक अध्याय लेती है। उन्हें हमेशा भगवान के चरित्र को उसी तरह याद रखने के लिए कहा जाता है जैसे वह पहले ही निभा चुका है।

भोजन, यह वास्तव में दिलचस्प है और हमारे लिए भी इसे ध्यान में रखना अच्छी बात है। पद 11: "तुम निकट आकर पहाड़ के नीचे खड़े हो गए, और पर्वत आकाश के हृदय तक आग से जलने लगा, और अन्धियारे, बादल और उदासी में लिपटा हुआ था। तब यहोवा ने बीच में से तुम से बातें कीं। आग। तुमने शब्दों की आवाज़ सुनी, लेकिन तुमने कोई रूप नहीं देखा, केवल एक आवाज़। इसलिए, उसने तुम्हें अपनी वाचा बताई, जिसे उसने तुम्हें पूरा करने की आज्ञा दी। यानी,

दस आज्ञाएँ, और उसने उन्हें दो तख्तियों पर लिखा पत्थर की। " दिलचस्प। वे माउंट होरेब या माउंट सिनाई पर कहानी का पुनर्कथन कर रहे थे। लेकिन भगवान की उंगली अनुपस्थित है। इस थियोफनी और प्रकृति के हिलने, अंधेरे, निराशा, बिजली, गड़गड़ाहट, में भगवान की उपस्थिति का प्रदर्शन किया गया है। ठीक है? यह एक बहुत ही प्रभावशाली प्रेरणादायक घटना है, लेकिन भगवान की कोई छवि नहीं है, जो मौजूद है। आग। हाँ, लेकिन एक वास्तविक छवि। नहीं।

### मूर्तियों के विरुद्ध चेतावनी

इसलिए, हम अगले कुछ छंदों में इस पर विस्तार करने जा रहे हैं। श्लोक 14 में, यह कहा गया है, "उसी समय प्रभु ने मुझे तुम्हें विधि और नियम सिखाने की आज्ञा दी, कि जिस देश का अधिकारी होने को तुम पार जा रहे हो, उस में तुम उनका पालन करो।" और यहाँ एक और चेतावनी है. "इसलिए जिस दिन यहोवा ने होरेब में आग के बीच में से तुझ से बातें की उस दिन तू ने कोई आकृति न देखी, इसलिये सावधान रहना; ऐसा न हो कि तू भ्रष्ट होकर किसी आकृति के रूप में अपने लिये खोदी हुई मूरत बना ले। , नर या मादा की समानता, पृथ्वी पर मौजूद किसी भी जानवर की समानता, आकाश में उड़ने वाले किसी भी पंख वाले पक्षी की समानता, जमीन पर रेंगने वाली किसी भी चीज़ की समानता, किसी भी मछली की समानता, जो अंदर है जल पृथ्वी के नीचे है। और सावधान रहना, अपनी आंखें आकाश की ओर न उठाना, और सूर्य, और चन्द्रमा, और तारागण और आकाश के सब गणों को देखना, और उन से दूर हो जाना, और उनको दण्डवत् करना, और उन की उपासना करना। जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने आकाश के नीचे के सब लोगोंको दिया है।"

हमें रुकना होगा क्योंकि मुझे लगता है कि यह वाकई दिलचस्प है। तो, हमारे पास कहानी की सेटिंग है। आप होरेब में थे, भगवान प्रकट हुए, आपने एक वाचा बनाई, लेकिन आप भगवान की छवि नहीं देख सके। अब, हम निर्गमन की कहानी से जानते हैं कि उसके बाद हारून था, और लोगों ने एक सुनहरा बछड़ा बनाने का फैसला किया, है ना? अपने प्यार और आराधना पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक छवि की आवश्यकता मनुष्यों के लिए एक मजबूत प्रेरक है।



और इसलिए, इस प्रवचन में हमारे पास अध्याय 4 में है; हमें यह सावधानी बरतनी है, सावधान रहें क्योंकि आपको होर ईबी की कहानी याद है। लेकिन अब, जब आप देश में जाते हैं, और आपको क़ानूनों और आज्ञाओं का पालन करने की आवश्यकता होती है, तो सुनिश्चित करें कि आप अपनी छवि बनाने की प्रवृत्ति का पालन न करें।

अब छवियों की एक सूची है, इसलिए मुझे उस सूची को पढ़ने दें और फिर आप मुझे बताएं कि क्या इससे कोई घंटी बजती है और क्या यह आपको कुछ हद तक परिचित लगता है, विशेष रूप से कुछ चीजों के बारे में जो मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मुझे कैसे लगता है कि व्यवस्थाविवरण अन्य की प्रतिध्वनि करता है पुस्तकें। तो हमारे पास नर या मादा, पृथ्वी पर जानवरों, पंख वाले पक्षियों, रेंगने वाली चीजों की समानता है, यह इस पर निर्भर करता है कि आप उसकी हिब्रू व्याख्या कैसे करना चाहते हैं, किसी मछली और सूर्य, चंद्रमा और सितारों की समानता। अब हम रुकेंगे क्योंकि सूर्य, चंद्रमा और तारे; लोग वास्तव में इन दिव्य प्राणियों की पूजा करते थे और विशेष रूप से अश्शूरियों और बेबीलोनियों के समय और बाद में इज़राइली इतिहास के दौरान। यह बहुत आम था, और हमें भविष्यवक्ता यिर्मयाह से पता चलता है कि इस्राएलियों ने समाज में उस प्रकार की पूजा को अपनाया था और अन्य चीजों की पूजा भी वहां थी। लेकिन मैं कहूंगा, हालांकि अधिकांश टिप्पणियाँ श्लोक 19 पर केंद्रित हैं, मुझे लगता है कि पूरी सूची वास्तव में महत्वपूर्ण है। यदि आप उस पूरी सूची को एक साथ रखें, तो शायद यह उत्पत्ति 1 की तरह लगे। क्योंकि जब आप मरते हैं तो वह सृजन करता है, वह पहले 3 दिनों में स्थान बनाता है, और फिर वह चीजों को उन स्थानों पर रखता है, है ना? और इसका क्रम ठीक उसके विपरीत है जैसा कि यहां सृष्टि में सूचीबद्ध है, नर और मादाओं को अंत में बनाया गया था, सूर्य, चंद्रमा और सितारों को शुरुआत और दिन 4 में बनाया गया था।

वास्तव में यह सूची दिन 6, दिन 6,, दिन 5 तक जाती है, हम छठे दिन पर वापस जाते हैं लेकिन वे पाँच और चार होते हैं।

वह हमें क्या बता रहा है? खैर, यह हो सकता है कि जैसे ही आप तय करते हैं कि आप अपने स्वर्गीय पिता के लिए एक समानता बनाना चाहते हैं और आप इसे इस तरह से करते हैं, तो यह सृष्टि को उल्टा करने जैसा है।

तो, सृष्टि के पिछड़ेपन, और टूटेपन के बारे में कुछ है जहां जब भगवान ने बनाया, तो उन्होंने बनाया, और उन्होंने पुरुषों और महिलाओं को अपनी समानता में बनाया। इसलिए, जब भगवान की समानता में निर्मित पुरुष और महिलाएं, भगवान के लिए एक समानता बनाने का निर्णय लेते हैं, तो यह सब कुछ उल्टा कर देता है।

### **सिनाई में आग**

तो, क्या हम श्लोक 20 तक पहुँचते हैं? और अब हम एक तरह से यहां एक विचार को समाप्त कर रहे हैं, लेकिन प्रभु ने आपको ले लिया है और उस पद के लिए एक लोग बनने के लिए आपको मिस्र से लोहे की भट्टी से बाहर लाया है। इसलिए मुझे यह बहुत पसंद है क्योंकि हमने इस खंड की शुरुआत छंद 11 और 12 में की थी जिसमें भगवान आग के रूप में और बादलों में दिखाई दे रहे थे ताकि उनकी कोई छवि न बनाई जा सके। फिर पद 28 के अंत में ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें मिस्र की भट्टी से बाहर निकाला। याद रखें कि निर्माता कौन है, और अगर हमें पहली बार यह विचार मिलता है कि मिस्र गुलामी की जगह और उत्पीड़न की जगह है। हम मिस्र में उस भूमिका में वापस आने जा रहे हैं जो मिस्र ने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में निभाई है।

तो, हमारे पास सिनाई की आग है। मिस्र की आग सिनाई की आग पर प्रतिक्रिया करके ईश्वर की नकल करने वाली कोई चीज़ नहीं बनाती है, बल्कि ईश्वर को निर्माता और आकार देने वाला बनने दें।

तो, हमें यह खंड मिलता है, यहां कुछ श्लोक हैं जहां मूसा से कहा जा रहा है कि उसे भूमि में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है। श्लोक 23 में, यह कहा गया है, "सावधान रहो, कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उस वाचा को न भूलो, जो उस ने तुम्हारे साथ बान्धी है, और जिस वस्तु के

विरूद्ध तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें आज्ञा दी हो, उस की एक खोदी हुई मूरत बनाओ।" क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा भस्म करने वाली आग, और जलन रखनेवाला परमेश्वर है।"

### चेतावनी कि भूलने से निर्वासन होता है

और फिर हमें यह विस्तारित चेतावनी मिलती है। "जब आप पिता बनें, जब आप माता-पिता बनें, जब आपके बच्चे और पोते-पोतियाँ हों तो सावधान रहें, मत भूलिए," ठीक है? और समस्या यह है कि यह निर्वासन का पूर्वाभास है, इस तथ्य का "लेकिन जब आप ऐसा करते हैं।" तो, आशा है कि आप भूलेंगे नहीं। परन्तु जब तुम भूल जाते हो, "तुम उस पर, या उस देश में जो परमेश्वर उन्हें देता है, अधिक समय तक जीवित न रहोगे, परन्तु पूरी तरह से नष्ट हो जाओगे। यहोवा तुम्हें देश देश के लोगों में तितर-बितर करेगा, और उन जातियों में जहां यहोवा तुम्हें पहुंचाएगा वहां तुम थोड़े ही रह जाओगे। वहाँ तुम मनुष्य के हाथ और पत्थर के बनाये देवताओं की सेवा करोगे, जो न देखते हैं, न सुनते हैं और न सूँघते हैं।" यह कुछ ऐसा है जिसे भविष्यवक्ता यशायाह ने उठाया है, और वह इस बारे में भी बात करता है कि मानव हाथों द्वारा बनाई गई चीजों की पूजा करना बिल्कुल हास्यास्पद है।

"परन्तु वहां से तू अपने परमेश्वर यहोवा को ढूँढ़ेगा ; यदि तू अपने सारे मन और प्राण से उसकी खोज करेगा, तो वह तुझे मिल जाएगा। अन्त के दिनोंमें जब तू संकट में पड़ेगा, और ये सब विपत्तियां तुझ पर आ पड़ेंगी, , तू अपने परमेश्वर यहोवा के पास फिरेगा, और उसकी बात सुनेगा। क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा दयालु परमेश्वर है। वह तुझे न तो नष्ट करेगा, और न नष्ट करेगा, और न उस वाचा को भूलेगा जो उस ने तेरे पुरखाओं से शपथ खाकर बान्धी थी। उनके लिए" (व्यव. 4:29)

स्वर्ग के एक छोर से दूसरे छोर तक पूछो। क्या इस महान कार्य के समान कुछ किया गया है, क्या इसके जैसा कुछ सुना गया है," सही (Deut. 4:32). तो, हमें चेतावनी मिल जाती है कि क्या होने वाला है। यदि आप अन्य देवताओं की पूजा करना चुनते हैं तो इसके परिणाम होंगे। लेकिन भले ही आप राष्ट्रों के बीच बिखरे हुए हैं, भले ही आप संख्या में कुछ ही रह गए हैं, जो लोग भगवान की ओर लौटते हैं और पश्चाताप करते हैं, वहां एक बहाली संभव है। इस विचार के लिए कि मूल निर्माता, ईश्वर, निर्माता ईश्वर है जो उनकी ओर से लड़ेगा।

श्लोक 34 में, यह कहा गया है , "क्या किसी देवता ने कभी किसी दूसरे राष्ट्र के भीतर से एक राष्ट्र को अपने लिए लेने की कोशिश की है।" यह वही परमेश्वर है जिसने उन्हें मिस्र की अन्धेरी भरी भट्टी से निकाल लिया।

"और परीक्षाओं, चिन्हों, और चमत्कारों, और युद्ध, और बलवन्त हाथ, बढ़ाई हुई भुजा, और बड़े भय के द्वारा, जैसा कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे लिखे किया। और तेरे साम्हने मिस्र को देखा? क्या तुझे ऐसा दिखाया गया? तुम जान लो कि प्रभु ही परमेश्वर है, उसे छोड़ कोई दूसरा नहीं।" यह एक बार फिर, एक और कथन है जो पूरे व्यवस्थाविवरण में अक्सर दोहराया जाता है। जिस परमेश्वर की इस्राएली उपासना करते हैं वह एक ही परमेश्वर है, और उसके बीच में, या उसके मध्य में कोई दूसरा नहीं है। उसके समान कोई दूसरा नहीं है। इसलिए उन्हें वास्तव में किसी अन्य देवता की पूजा नहीं करनी चाहिए?

मैं श्लोक 39 पर जा रहा हूँ। यह कहता है, "इसलिए आज जान लो, और अपने हृदय में यह धारण कर लो कि प्रभु वह ईश्वर है, ऊपर स्वर्ग में और नीचे पृथ्वी पर। कोई दूसरा नहीं है। इसलिए, तुम उसकी विधियों का पालन करोगे।" उसकी आज्ञाओं के अनुसार जो मैं आज तुझे देता हूँ, इसलिये कि तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का भी भला हो, और जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन तक जीवित रहे। यह पहले से ही पहले भाग की प्रतिध्वनि की तरह लगना चाहिए, पहली कविता जिसे हमने अध्याय 4 में पढ़ा है

### **ट्रांस-जॉर्डन में शरण के 3 शहर**

अब, अध्याय 4 के अंतिम छंद, पूरी तरह से गियर बदल देते हैं। इसलिए, हम उस स्थान के निकट भूमि की अवधारणा के इस विचार से आगे बढ़ते हैं, लेकिन भूलते नहीं हैं , बल्कि यह याद करते हैं कि मूसा के लिए उनका भगवान कौन है। अब, तीन शरणनगर बसा रहे हैं। वे सभी रिफ्ट घाटी के पूर्वी हिस्से में होंगे, इसलिए, भूमि के बाहर की तरफ। इस प्रकार वह क्षेत्र समाप्त हो गया जहां वे पहले से ही उन क्षेत्रों में थे जहां उन्होंने सीहोन पर विजय प्राप्त की थी, और उन क्षेत्रों में, उन्हें शरण के लिए तीन नगर स्थापित करने थे।

अब, शरण नगर की अवधारणा एक ऐसी चीज़ है जो फिर से सामने आएगी, और कानून संहिता में आने के बाद हम इस पर चर्चा करेंगे। लेकिन मैं यहाँ अध्याय 4 में शरण के उन तीन शहरों का उल्लेख करना चाहता हूँ।

इन्हें बहुत विशिष्ट स्थानों के नाम दिए गए हैं। वास्तव में, अगर हम पिछले कुछ व्याख्यानों पर विचार करें तो हमें बहुत सारे भौगोलिक विवरण, क्षेत्र, मार्ग, लोगों के समूह, शहरों के नाम से लेकर बहुत सारी विशिष्ट चीज़ें मिली होंगी जो भूमि और भूमि में अंतर की पहचान करती हैं। उस भूमि पर रहने वाले लोगों में मतभेद।

### **संभावित अवलोकन**

मैं चाहता हूँ कि आप व्यवस्थाविवरण में आगे बढ़ते समय इस बात पर ध्यान दें कि जैसे ही हम इस भूमि, इस स्थान जहाँ हम जा रहे हैं, पर अपनी दृष्टि डालते हैं, इस स्थान में बहुत अधिक संभावनाएं हैं। भूगोल के विवरण जो लोगों को तोड़कर अलग कर देंगे, उनका अब उल्लेख नहीं किया गया है। इसे एक भूमि माना जाता है; हमें शहर के नाम नहीं मिलते, हमें आदिवासी पदनाम नहीं मिलते। वास्तव में, इस विचार का भी उल्लेख नहीं किया गया है कि जनजातियों के नेताओं के साथ भी जनजातियाँ होती हैं; हम शहरों, बड़े शहरों, छोटे गांवों में जाना शुरू करते हैं, हम लोगों को कैसे एकजुट करते हैं? लेकिन एक बार जब हम भूमि में पहुँचे, तो हमने व्यवस्थाविवरण में बहुत विशिष्ट बातों का उल्लेख सुनना बंद कर दिया। तो, हम इसके बारे में थोड़ी सी बात करेंगे, खासकर जब हम अध्याय 11 पर आते हैं क्योंकि अध्याय 11 में एक बहुत ही महत्वपूर्ण शहर का नाम बताने का यह सही अवसर है, और ऐसा होता है

समय निर्धारित करें, लेकिन व्यवस्थाविवरण क्या कर रहा है? जैसा कि यह एक जगह बना रहा है, उस जगह के प्रकार की एक तस्वीर जहाँ इस्त्राएली हो सकते हैं।

### **व्यवस्थाविवरण 4 का सारांश**

तो संक्षेप में, हम देखेंगे और कहेंगे, अध्याय 4 में, हमने सिनाई पर्वत का विचार देखा है।

हमने माउंट सिनाई और एक संभावित उद्यान के बीच या कम से कम बगीचे की छवियों से उधार लेकर यह छोटी सी तुलना की है। विचार यह है कि आप वास्तव में भगवान की छवि में बनाए गए हैं। और इसलिए, इसे पलटना मृत्यु है, या जिस तरह से भगवान ने चीजों को स्थापित किया है उसे अस्वीकार करना है, और भगवान को स्वयं उनकी रचना के एक हिस्से तक सीमित नहीं किया जा सकता है। तो यह कुछ ऐसा है जिस पर बाइबिल की कथा बहुत दृढ़ है: ईश्वर हमेशा सृष्टि से बाहर बड़ा खड़ा होता है और उसे एक छोटी छवि या मूर्ति में समेटा नहीं जा सकता क्योंकि वह उससे बहुत बड़ा और व्यापक है।

यहीं से हम अध्याय 5 की ओर बढ़ेंगे और कानून संहिता में अपना हाथ डालेंगे।

यह डॉक्टर सिंथिया पार्कर और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर उनका शिक्षण है। यह व्यवस्थाविवरण 4 पर सत्र 3 है।